पंचम अध्याय

''मध्यवर्गीय जीवन-चित्रण एवं कहानी कला की दृष्टि से विवेच्य कहानियों की विशेषताएँ''

''मध्यवर्गीय जीवन-चित्रण एवं कहानी कला की दृष्टि से विवेच्य कहानियों की विशेषताएँ''

5.1 मध्यवर्गीय समाज जीवन की विशेषताएँ -

चंद्रकांता की विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत समस्याओं के अध्ययन के बाद विवेच्य कहानियों की विशेषताओं का विवेचन, विश्लेषण इस अध्याय के अंतर्गत करने का प्रयास किया है। उनके साहित्य में जो यथार्थ, झूठ, पाखंड और विसंगति जैसी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं, उन विशेषताओं का क्रमशः विवेचन यहाँ प्रस्तुत है -

5.1.1 झूठ और पाखंड की प्रवृत्ति का चित्रण -

झूठ और पाखंड की वृत्ति चंद्रकांता की कुछ कहानियों में मिलती है। अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने आपको बेच देनेवाले लोगों की आज भी कमी नहीं है। ऐसे ही व्यक्ति का चित्रण यहाँ किया है।

'नूराबाई' कहानी में मध्यवर्गीय गरीब परिवार का चित्रण किया है। कहानी की नायिका नूरा है। उसका पति शराब पीने तथा वेश्या के पास जाने के कारण हमेशा बीमार रहता है। नूरा अकेली ही घर चलाती है। सूफी जिस सेठ के मिल में नौकरी करता था उसी मिल में सूफी का मित्र जद्देशाह नूरा को काम दिलवाता है। जद्देशाह नूरा को कठिन समय पर मदद भी करता है। जद्देशाह नूरा के घर हररोज आता है। एक दिन जब उसे अपने घर जाने के लिए देर होती है तब वह नूरा के घर में ही सोता है। उसी रात में वह नूरा को धमकाकर उस पर अन्याय, अत्याचार करता है।

नूरा जिस मिल में काम करने जाती है वहाँ का सेठ नूरा बीमार पड़ने पर बेटी को काम पर भेज देने की सलाह देता है। नूरा कहती है कि मेरी बेटी छोटी है, तब सेठ नूरा का कहता है - ''अरे छोटी-बड़ी क्या, ग्यारह-बारह साल की तो होगी। सेठानी काम सिखायेगी। हम भी तो बाल-

बच्चोंवाले हैं। यह इस लिए कह रहा हूँ कि तूझे आराम की जरूरत है।''[1] नूरा सेठ के बातों में आकर अपनी बेटी हसीना को काम पर भेज देती है। उसी दिन सेठ हसीना पर बलात्कार करता है।

एक दिन जद्देशाह भी नूरा को बस स्टॉप पर मिलने बुलाता है। नूरा तो आती है, लेकिन जद्देशाह खुद नहीं आता। वह नूरा के घर जाकर हसीना पर बलात्कार करता है। इस प्रकार सेठ और जद्देशाह झूठ बोलकर नूरा और उसकी बेटी हसीना पर अत्याचार करते हैं।

'दहलीज पर न्याय' कहानी की नायिका रूक्की है। रूक्की को शादी के पाँच साल बाद बच्चा होता है। तब वह अपने बच्चे को लेकर देवी माँ के मंदिर में दर्शन लेने जाती है। देवी का भक्त महंत रूक्की के बेटे की बली माँगता है। रूक्की महंत की डर से गाँव छोड़कर भाग जाती है। रूक्की दूसरे गाँव जाकर सरदार अत्तर सिंह के घर में रहती है। सरदार अत्तरसिंह उसे घर में रहने के लिए जगह देता है और अच्छी तरह से संभालता है। एक दिन जब सरदारनी अपने मायके चली जाती है तब सरदर रूक्की को अकेली पाकर बीमार होने का ढोंग करता है। रूक्की को सिर या पैर दबाने के लिए अपने पास बुलाता है और उसे डरा-धमकाकर उस पर अत्याचार करने की कोशिश करता है। लेकिन रूक्की सरदार का सिर पलंग की पाटी पर मारकर अलग हट जाती है और कहती है - ''जा छोड़ दिया, तुझे पापी! तेरी बीवी ने मुझ पर एतबार किया है। तुझ जैसा पाखंड़ी औरत को देखकर लाट ही टपका सकता है, उसे बहन, बेटी नहीं मान सकता, इसका मुझे गुस्सा नहीं, पर तूने मेरे बच्चे को हाथ लगाना चाहा।''[2] सरदार झूठे और पाखंड़ी व्यक्तित्व के कारण रूक्की पर अत्याचार करना चाहता है।

5.1.2 घृणित प्रवृत्तियों का चित्रण -

चंद्रकांता ने 'सूरज उगने तक' और 'जंगली जलेबी' और 'दहलीज पर न्याय' कहानियों में घृणित प्रवृत्तियों का चित्रण कुशलता से किया है -

'सूरज उगने तक' कहानी में भ्रष्टाचार का चित्रण किया है, जिसे देखकर मन में घृणा निर्माण होती है। कहानी का नायक विमल ईमानदार इंजीनियर है। जिस फर्म में वह नौकरी करता है, वहीं दर साहब चीफ इंजीनियर हैं। दर साहब भ्रष्टाचार करते हैं। विमल को दर साहब का भ्रष्टाचार

पसंद नहीं है। विमल दर साहब को भ्रष्टाचार करने से विरोध करता है। इसलिए दर साहब विमल को नौकरी से निकाल देते हैं तब विमल कहता है - "मुझे उनकी ऊपर से नीचे तक की धाँधली और हरेक के लिए बँधे कमिशन 'चायपानी' की रकम से कोई लेना-देना न था। फिर भी मुझे इस पूरे सिस्टम से वितृष्णा थी, जिसे मैं समय-समय पर उगला करता और जिनकी भनक उन्हें मिलती रहती थी। कई विभीषण जो थे उनके राज्य में। सो उन्हें अचानक ही मुझे प्रताड़ित करने का मौका मिल गया था।"[3] लेखिका ने दर साहब के माध्यम से भ्रष्टाचार का चित्रण इस कहानी में किया है।

'जंगली जलेबी' कहानी का नायक गणेशी है। गणेशी की पत्नी लक्ष्मी पति होने के बावजूद भी दूसरे पुरुष के साथ अनैतिक संबंध रखती है। गणेशी और लक्ष्मी देहात से आए गरीब दांपत्य है। लक्ष्मी का पति ऑफिस जाने के बाद उनके गाँव का एक पुरुष लक्ष्मी के पास आता है। जब गणेशी को मालूम होता है तो वह अपने पत्नी को कहता है - "यह कौन-सा बावा किस काम से भर दुपहर तेरे घर दस्तक देने आता है रोज-रोज।"[4]

लेखिका ने लक्ष्मी के माध्यम से शादी के बाद स्त्री किसी पराए मर्द के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है, तब उस स्त्री के प्रति मन में घृणा का भाव उत्पन्न होता है यह चित्रित किया है।

'दहलीज पर न्याय' कहानी में पुलिस जनता पर किस तरह अन्याय करती है इसका चित्रण किया है। महंत नायिका रूक्की के बच्चे की बलि देना चाहता है। इस डर से रूक्की गाँव छोड़कर भाग जाती है। दूसरे दिन रूक्की महंत के खिलाफ रपट (फरियाद) लिखवाने पुलिसथाने जाती है। वहाँ पुलिस उस पर अत्याचार करते हैं। उसकी खिल्ली उड़ाते हैं। पुलिसवाला उसे बीच-बीच में टोकता है और सवाल पूछता है - "महंत नहीं, महंत जी कहो। क्या कहा महंत जी ने ओ-हो-हो-हो दस बेटे जनेगी कहा ? ओ हो-हो-हो गलत नहीं कहा। मैं तो कहूँ, बीस छोटे जनेगी तू-ऐसी कसी-तनी देह है तेरी।"[5] इससे पुलिस की पशुता का दर्शन होता है। उस पशुता को देखकर मन में घृणा पैदा होती है।

5.1.3 लोक कल्याणकारी पात्रों का चित्रण -

लोक कल्याण की भावना चंद्रकांता की कुछ कहानियों में देखने को मिलती है। लोक कल्याण की भावना को जतानेवाले लोग आज बहुत कम मात्रा में दिखाई देते हैं। आम तौर पर लोग स्वार्थ के पीछे भागते जा रहे हैं। जहाँ स्वार्थ है, वहाँ लोक कल्याण संकल्पना करना ही उचित नहीं है। परंतु चंद्रकांता ने कहानियों में ऐसे पात्रों को स्थान देकर लोगों के मन में लोक कल्याण की भावना निर्माण करने की कोशिश की है।

'सूरज उगने तक' कहानी में भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। कहानी का नायक विमल मध्यवर्गीय समाज का ईमानदार पढ़ा-लिखा लड़का है। पिताजी उसे सरकारी लोन लेकर इंजीनियर बनाते हैं। विमल विश्वविद्यालय में प्रथम-श्रेणी में उत्तीर्ण हाने के कारण उसे नौकरी मिलती है। विमल के वरिष्ठ अधिकारी दर साहब भ्रष्टाचारी हैं। एक दिन जब साइट पर काम करते समय मजदूर जख्मी होता है तब विमल उसे अस्पताल लेकर जाता है। वरिष्ठ अधिकारी विमल पर गुस्सा करते हैं और मजदूरों को फुसलाने का आरोप लगाकर नौकरी से निकाल देते हैं। विमल मजदूरों के हक्क के लिए लड़ता है। इसी कारण उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

'धराशायी' कहानी में मध्यवर्गीय संघर्षपूर्ण जीवन जीनेवाली नारी का चित्रण किया है। कहानी की नायिका वी. वी. पन्नालाल ट्रेड़र्स में काम करती है। वी. वी. ईमानदार औरत है। कंपनी के मालिक सत्याग्रही साहब अपनी चापलूसी करनेवाले नौकरों को ही पदोन्नति देते हैं। वी. वी. सब से सीनियर होते हुए भी उसकी पदोन्नति नहीं होती। तब वी. वी. मजदूरों और कर्मचारियों या युनियन के नेताओं को लेकर सत्याग्रही साहब के विरूद्ध आवाज़ उठाती है। वी. वी. कर्मचारियों, मजदूरों के लिए लड़ती है। लेकिन अंत तक उसे कोई साथ नहीं देता। वी. वी. अकेली पड़ती है। तब उसका दोस्त अशुमाली वी. वी. को समझाकर कहता है - "वी. वी. से सुना न गया। नौकर! गुलाम! ये लोग कभी शोषण के विरूद्ध आवाज़ उठा सकेगें ? वी. वी. घर चली गई। कोई निर्णय लेने। अकेले ही लड़ना होगा। भीड़ का कोई चेहरा होता है ? उनका खून खौलने लगा। कितने स्वार्थी हैं, उनकी क्या जिम्मेदारियाँ नहीं हैं।"[6] लेखिका ने लोक कल्याण की भावना रखनेवाली वी. वी. का चित्रण किया है।

'पापा तो बस' कहानी का नायक एक मध्यवर्गीय युवक है। वह परिवार का जिम्मेदार लड़का है। तीन साल पहले बी. ए. कर चुका है, फिर भी उसे कहीं नौकरी नहीं मिलती। एक दिन वह मुलाकत (इंटरव्यु) देने के लिए शहर में जाता है। शहर में उसके सब पैसे खर्च होते हैं। उसे घर जाने के लिए कुछ पैसों की जरूरत पड़ती है। तब वह शरीफ लोगों की बस्ती में मिसेज डी. के. के घर में जाता है। वहाँ उसे नौकर चोर, डाकू आतंकवादी समझकर मार-पीट करते हैं।

उसी समय दासबाबू नामक एक व्यक्ति उसे अपने घर लेकर जाता है। दासबाबू उसे खाना खिलाकर पैसे देते हैं। लेखिकाने लोक कल्याण की भावना जतानेवाले दास बाबू का चित्रण किया है।

5.1.4 सामाजिक आदर्श का चित्रण -

हिंदी कहानी के प्राचीन काल को लेकर आज तक सामाजिक आदर्श का चित्रण अनेक कहानियों द्वारा किया गया है। उसी तरह चंद्रकांता ने भी अपनी कहानियों में आदर्श की स्थापना करने का प्रयास किया है।

'अनार के फूल' कहानी में एक परित्यक्ता नारी का चित्रण किया है। कहानी की स्त्री पात्र नूरी तलाकशुदा औरत है। उसका पति उसे तलाक देकर बुआ की लड़की के साथ शादी करता है। नूरी अपने दो बच्चे को लेकर अकेली मजदूरी करती है। जब उसे अपने साथ घटी हुई बातें याद आती हैं, तब वह अपना प्यारा गीत गाकर दर्द कम करने की कोशीश करती है। नूरी चार आदमियों के बराबर काम करती है। नूरी काम करते समय अपने साथियों से कहती भी है कि - ''बीबी ! बस यही मदू और सुबू अल्लाह ने दिए हैं। उन्हीं के लिए हाड़ तोड़ती हूँ। मर्द तो बेवफा निकला। बैठ गया बुआ की लड़की को लेकर, बच्चों का हवाला दिया, मगर माना नहीं, कहने लगा - जी नहीं पाऊँगा उसके बगैर। अब मैं उसकी मुहब्बत को रोऊँ या अपनी किस्मत को ? बस छोड़ दिया। जा ! अपने दो हाथ सलामत रहे।''[7]

नूरी जी-तोड़ मेहनत करके अपने दो बच्चों के साथ जीवन बिताती है। यही उसका सामाजिक आदर्श है।

'पहाड़ी बारिश' कहानी में आदर्शवादी मित्र का चित्रण किया है। कहानी का नायक कुमार है। एक दिन वह और उसके मित्र की बहन श्री एक ही गाड़ी में सफर करते हैं। सफर करते समय बारिश बहुत होती है। बारिश के कारण ड्रायव्हर गाड़ी एक होटल में लगवाता है। कुमार और श्री दोनों को एक ही कमरा मिलता है। दोनों एक ही कमरे में रहते हैं। कुमार चद्दर लेकर रूम के एक कोने में सो जाता है। दोनों भी शादी-शुदा हैं। लेकिन अकेली औरत को देखकर कोई भी कुछ कर सकता है। फिर भी कुमार श्री के साथ अच्छा व्यवहार करता है। नायक कुमार का आदर्शवादी रूप कहानी में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

5.1.5 सामाजिक यथार्थ का चित्रण -

यथार्थ का चित्रण साहित्य में होना महत्त्वपूर्ण है। चंद्रकांता के साहित्य में इसका कई-ना-कई दर्शन जरूर मिलता है। सामाजिक यथार्थ को साहित्य के माध्यम से लोगों के सामने लाने का प्रयास चंद्रकांता ने अपनी कुछ कहानियों के माध्यम से किया है।

'पुनर्जन्म' कहानी में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। कहानी का नायक गोपाल निम्न मध्यवर्गीय युवक है। गरीबी के कारण उसे ठीक तरह से कपड़े भी पहनने के लिए नहीं हैं। उसकी माँ उसे अपने रिश्तेदार के यहाँ काम करने भेज देती है लेकिन वहाँ गोपाल चोरी करता है। चोरी करके पैसे घर में लाता है। उसकी माँ पैसे देखकर उसे पूछती है और मारपीट करती है। तब गोपाल गुस्से में कहता है - ''ये साले पैसेवाले, जब जो, जी में आये, खरीद सकते हैं। पूराने कपड़ों की तरह कार्पेट, कारें और बंगले बदल सकते हैं और हम कुत्तों की तरह इनके टूकड़ों के सहारे जीते हैं। सोमभाई आऊट ऑफ डेट पैंट, कोट यों फेंक देते हैं, ज्यों पोंचा लगाने का लीटा हो। विलायत से लौटा लालभाई आए दिन नीड़ोज में पार्टियाँ देता है। दो-तीन हजार से इनको क्या फर्क पड़नेवाला है भाई ?''[8]

कहानी का दूसरा पात्र दयाला भी गरीबी के कारण चोरी करता है। दयाला चोरी करते समय पकड़ा जाता है। उसे पकड़ते समय घबराहट और छुटने की छटपटाहट में दयाला गोली चलाता है। पुलिस आने के पहले लोग उसकी धुलाई करते हैं। पुलिस दयाला को पकड़कर ले जाती है और मालिक पर गोली क्यों चलाई यह प्रश्न पूछते हैं, तब दयाला कहता है - ''इतना पैसा साहब ? कौन देता है ? मैं बौरा गया था साहब। मैं सिनेमा देखना चाहता था, अच्छे कपड़े पहनना चाहता था साहब और मेरी माई सर्दी में अकड़ जाती थी। उसके पास गरम ओढ़ना नहीं या.... मैंने कसूर किया है, मुझे जेहल-फांसी दे दो, मैं साहब बनना चाहता था।''[9] यह वास्तविकता आज भी समाज में दिखाई देती है।

'वितस्ता की जहर' कहानी में सामाजिक यथार्थ का वास्तविक चित्रण किया है। कहानी में हिंदू-मुस्लिम परिवारों का चित्रण है। सब लोगों के दीन-धर्म तो अपने-अपने हैं। लेकिन प्यार साझा है। सब लोग मिल-जुलकर रहते हैं। परंतु कुछ बद्‌दिमाग लोग उनमें आतंक फैला रहे हैं। सब लोग भाई-भाई की तरह रहते हैं। उनमें कोई भेद-भाव नहीं है। कहानी का नायक कहता है कि ''जो ऐसा करते हैं सब गुण्डे हैं। पाकिस्तान में ट्रेंण्ड़ फुसलाए गए गुमराह लोग हैं। हमारे पास-पड़ोस में भी तो लोग हैं वे क्या हमारे दुश्मन हो गए हैं ? रियाज, नबी, सुलजू.... बल्कि रियाज भी दुःखी है, अमीराक दल में उसकी हार्ड्वेअर की दुकान जला डाली बदमाशों ने।''[10]

आतंकवादी बहु-बेटियों की सरेआम छेड़खानी करते हैं। हर दिन आदमियों के सिर पर मौत का डर रहता है। आज भी पाकिस्तान में ट्रेण्ड़ हुए आतंकवादी कश्मीर के नाम पर आतंक फैला रहे हैं। इसका यथार्थ चित्रण कहानी में किया है।

'सच और सच का फासला' कहानी में मध्यवर्गीय गरीब परिवार का चित्रण किया है। श्रीधर मल्ला परिवार के प्रमुख हैं। उनका बड़ा परिवार है। गरीबी के कारण वह अपनी बहनों की शादी नहीं कर सकता। उनकी तीनों बहनों को कुंवारी रहना पड़ता है। उसकी छोटी बहन प्रेमा बहुत सुंदर है। दहेज के कारण उसकी शादी नहीं हो सकती। अंत में वह अन्य जाति के युवक के साथ भाग जाकर शादी करती है।

गरीब लोगों को दहेज के कारण या गरीबी के कारण अपनी बेटियों को कुँवारी रखना पड़ता है। इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है।

'मुक्ति-प्रसंग' कहानी में गंगा घाट पर पिताजी का श्राद्ध कार्य करने आए पुत्रों का चित्रण किया है। पिताजी के श्राद्ध के अवसर पर सभी लड़के आते हैं। श्राद्ध बड़े धूम-धाम से करते हैं। उसी समय कुछ भीखमंगे कुछ तो मिलेगा इस आशा से वहाँ आते हैं। खाना खाते समय भीखमंगे ज्यादा शोर करते हैं। वह भीखमंगों को भी खाना परोसते हैं और कहते हैं - ''खानेवालों की भूख भी आनंत थी। पूड़ी-सब्जी पर गिद्धों की तरह टूट पड़ते थे और-और की रट लगाये जा रहे थे। शोर जादा हुआ तो मुख्य पण्ड़े ने जरा धमकाते हुए उन्हें शांत रहने का आदेश दिया, यानि कि जो मिलता है चुप-चाप खाओ और फूटो यहाँ से।''[11]

पेट की आग बूझाने के लिए भीखमंगों को कभी-कभी मार-पीट भी खानी पड़ती है। भूख के कारण आदमी-आदमी को खा रहा है। यह आज की वास्तविकता है।

5.1.6 संघर्ष का चित्रण -

चंद्रकांता की कई कहानियों में संघर्ष का चित्रण मिलता है। संघर्ष माँ-बेटे, पति-पत्नी, प्रियकर-प्रेयसी, पुरानी पीढ़ी-नई पीढ़ी, सत्य-असत्य आदि के बीच संघर्ष का चित्रण लेखिका ने अपने कहानियों में किया हुआ दिखाई देता है। संघर्ष आदमी के जीवन में किसी-न-किसी कारण वश होता ही है। आधुनिक युग में तो संघर्ष पल-पल दिखाई देता है। जीवन में संघर्ष होना ही चाहिए। लेकिन वह उचित कार्य के लिए हो। उस संघर्ष में अगर अच्छी अभिव्यक्ति न होगी तो वह संघर्ष निरर्थक होगा।

'सूरज उगने तक' कहानी में नायक विमल और चीफ इंजीनियर दर साहब में संघर्ष है। विमल एक ईमानदार और हर वक्त अपने काम में व्यस्त रहनेवाला युवक है। दर साहब भ्रष्टाचारी हैं। वह हर मजदूर से लेकर कॉन्ट्रॅक्टर तक से कमीशन लेता है। विमल मजदूरों को हर समय मदद करता है, तब विमल को वरिष्ट अधिकारी कहते हैं - ''मजदूरों का नेता बन रहा है, स्साला, चार दिन में

यह नेतागिरी निकाल दी जाएगी।''[12] विमल दर साहब को भ्रष्टाचार करने से विरोध करता है। इसलिए उसे नौकरी से निकाला जाता है।

'अनार के फूल' कहानी में पिताजी और माँ के विरोध में बेटी संघर्ष करती है। कहानी की नायिका नूरा सुशिक्षित तथा नौकरी पेशा लड़की है। वह मुसलमान युवक नसीर के साथ शादी करना चाहती है, लेकिन नूरा के पिताजी नसीर दूसरे धर्म का होने के कारण शादी करने के लिए इजाजत नहीं देते। आखिर नूरा माँ और पिताजी का विरोध करके नसीर के साथ शादी करती है।

'मुक्ति प्रसंग' कहानी में पति-पत्नी में संघर्ष है। कहानी का नायक गणेशी है। गणेशी की पत्नी लक्ष्मी पति होने के बावजूद भी किसी अन्य पुरुष के साथ अनैतिक संबंध रखती है। पत्नी के संबंध जब गणेशी को मालूम होते हैं, तब गणेशी पत्नी को मार-पीट करता है। अनैतिक संबंध को लेकर पति-पत्नी में संघर्ष है।

'नानी तुम ?' कहानी में भी पति-पत्नी में संघर्ष है। कहानी की नायिका डॉ. प्रिया अमरिका में एम्. डी. करने के बाद, वहीं अस्पताल में नौकरी करती है। उसी समय प्रभाकर नामक युवक के साथ प्रेम-विवाह करती है। दोनों साल भर खुशी से रहते हैं। लेकिन जब उन्हें संतान होती है तो उनमें संघर्ष निर्माण होता है, क्योंकि बच्चा जन्म से ही दिल का मरीज़ होता है। बच्चे को लेकर दोनों में संघर्ष होता है।

5.1.7 सामाजिक विसंगतियों का चित्रण -

प्राय: प्रत्येक मनुष्य में विसंगति होती है। विसंगति मनुष्य के अंतर के भावों से प्रकट होती है। विसंगति के आधार पर समाज व्यवस्था अवलंबित है। विसंगति के कारण मनुष्य ही मनुष्य को दबाए जा रहा है। ऐसी ही कुछ विसंगतियों का चित्रण लेखिका ने अपनी कहानियों में किया है।

'फिलहाल' कहानी में भाई-बहन के व्यवहार में विसंगति दिखाई देती है। कहानी की नायिका मधुरिमा सुशिक्षित नौकरी पेशा युवती है। उसके परिवार में दो भाई और अंधी माँ, बीमार बहन

है। उसका बड़ा भाई राजन जब तक अपनी शादी नहीं होती, तब तक घर में रहता है। शादी होने के बाद पत्नी के साथ अलग रहता है। मधुरिमा अकेली ही घर चलाती है। दिपावली के समय राजन माँ को पुरानी साड़ी लेकर आता है। लेकिन मधुरिमा माँ के लिए नई साड़ी लाती है। रात को खाना खाते समय मधुरिमा की भाभी उसे कहती है - ''माँ के लिए मैं नई साड़ी लाने की सोच रही थी, पर तुम्हारे भैया बोले, माँ को नए-पुराने का फर्क क्या मालूम पड़ेगा। फिर अभी तुम्हारे भैया का इन्कमटैक्स भी काफी कटता है। हाथ में गिनकर पैसे आते हैं, इसी से....।''[15]

राजन जन्म देनेवाली माँ को नहीं संभालता। लेकिन मधुरिमा कुंवारी रहकर अपनी अंधी माँ और बीमार बहन को संभालती है। यहाँ दोनों बहन-भाई के व्यवहार में विसंगति दिखाई देती है।

'एक लड़की शिल्पी' कहानी में शिल्पी और अमित के प्रेम में विसंगति दिखाई देती है। शिल्पी और अमित दोनों इंजीनियरिंग की क्लास में पढ़ते हैं। दोनों सहपाठी हैं। अमित और शिल्पी एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। शिल्पी अमित से शादी करना चाहती है, लेकिन अमित शिल्पी को धोखा देता है और डा. सूलक्षणाराव नामक लड़की से शादी करता है। अंत में शिल्पी वसंत नामक लड़के के साथ शादी करके अपना घर बसाती है। लेखिका ने अमित और शिल्पी के माध्यम से विसंगतियों का चित्रण किया है।

'बात ही कुछ और' में चंद्रकांता ने आज के प्रेम करनेवाले प्रेमियों के माध्यम से विसंगति का चित्रण किया है। कहानी की नायिका सुहानी इंजीनियरिंग की क्लास में पढ़ती है। नायक जतीन उसका सहपाठी है। जतीन और सुहानी एक-दूसरे से बेहद प्यार करते हैं। जतीन किसी प्राइवेट फर्म में नौकरी भी करता है। सुहानी जतीन से शादी करना चाहती है। तब जतीन उसे समझाकर कहता है - ''लेकिन तुम जानती हो डियर, रजिस्टर पर दस्तखत करने के बाद भी तुम स्वतंत्र रहोगी। भारतीय पति-पत्नी की तरह हम एक-दूसरे को 'पर्सनल प्रॉपर्टी नहीं समझेंगे। दैट्ज ए डील।''[16]

जतीन सुहानी से शादी नहीं करता। कुछ दिनों बाद जतीन अमरिका चला जाता है। अंत में सुहानी शादी का निर्णय अपने माता-पिता पर सौंप देती है। चंद्रकांता ने आज के प्रेमी युवक-युवतियों के विचार-विनिमय में जो विसंगति है उसका यथार्थ रूप से चित्रण किया है।

5.1.8 अंधविश्वास एवं रूढ़ि परंपरा का चित्रण -

चंद्रकांता ने अंधविश्वास एवं रूढ़ि परंपरा का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। अंधविश्वास के कारण लोग अपनी उन्नति को खो बैठते हैं। आमतौर पर अंधविश्वास की भावना अनपढ़, गँवार आदि लोगों में ज्यादातर होती है। सच्चाई क्या है यह उन्हें मालूम नहीं होता और वे सच्चाई जानने की कोशिश भी नहीं करते। लेकिन आज कुछ शिक्षित लोग भी अंधविश्वास का शिकार बन रहे हैं। अत: अंधविश्वास और रूढ़ि-परंपराओं पर प्रकाश डालने का कार्य कुछ मात्रा में लेखिका ने किया है।

'दहलीज पर न्याय' इस कहानी में चंद्रकांता ने अंधश्रद्धा का चित्रण किया है। कहानी की नायिका रूक्की है। उसे शादी के पाँच साल बाद बच्चा होता है। इस खुशी से रूक्की बच्चे को लेकर देवी माँ के मंदिर में आती है। उस समय देवा का भक्त महंत उसे कहता है कि- देवी माँ ने तेरे बेटे की बलि माँगी है। अगर तू इसकी बलि देगी तो दस बच्चे जनेगी। महंत के डर से रूक्की गाँव छोड़कर भाग जाती है। महंत अंधविश्वास के कारण रूक्की के बच्चे की बलि देना चाहता है।

'हत्यारा' इस कहानी में अंधश्रद्धा का चित्रण दिखाई देता है। कहानी का नायक वीरासिंह एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार का युवक है। वह अपने पिताजी, पत्नी और बच्चों के साथ सुखी जीवन बिताता है। लेकिन कहानी का दूसरा पात्र नत्थासिंह धार्मिक यात्रा करके गाँव आता है और सारे गाँव में खबर फैलाता है कि नत्था 'औतार' बन गया है। गाँव के लोग एक दिन नत्था का 'औतार' देखने आते हैं। उसी समय नत्था दो बच्चों का सिर काटता है। लोग विश्वास करते हैं कि नत्था बच्चों को फिर जीवित करेगा। लेकिन बहुत देर होने के बाद भी नत्था बच्चों को जीवित नहीं करता। तब लोग कहते हैं - ''जै हो औतार जी, देर न करो ! अपनी शक्ति का 'परदर्शन' करो, जै हो महाराज ! लेकिन

आस-पास के देवताओं ने आँख मूंद ली, कान बंद करा लिए।''[13] अंत तक नत्था बच्चों को जिंदा नहीं कर सकता। आखिर पुलिस नत्था को पकड़कर ले जाती है।

अंधश्रद्धा के कारण बच्चों की जान जाती है। लेखिका ने अंधश्रद्धा पर विश्वास रखनेवाले लोगों का यथार्थ चित्रण कहानी में किया है।

'मुक्ति-प्रसंग' इस कहानी में अंधश्रद्धा पर विश्वास रखनेवाले लोगों का चित्रण किया है। पिताजी का देहांत होने के बाद बेटे गंगा घाट पर श्राद्ध करने आते हैं। पिताजी की आत्मा को शांति मिले, इस भावना से खूब दान-धर्म करते हैं। उसी समय उनकी छोटी बहन बीमार पड़ती है। वह अपवित्र होती है। इसलिए वह उस कार्यक्रम में शामिल नहीं होती। वह जब दूर जाकर बैठती है तब उसकी भाभीयाँ उसे कहती हैं कि, ''बेचारी, पिता को उसकी सेवा मंजूर नहीं होगी। अंतिम दर्शन भी कहाँ किये ? हाथ लगने होते तो उनकी मृत्यु के चार दिन पहूँच पाती ? और अब देखो, इस वक्त अपवित्र होना। इस सबका कुछ मतलब तो होगा ही।''[14] आज शिक्षित होकर भी लोग अंधश्रद्धा पर विश्वास रखते हैं।

5.2 कहानी कला की दृष्टि से चंद्रकांता की कहानियों की विशेषताएँ -

चंद्रकांता नई कहानी की सशक्त कहानीकार हैं। नए कहानीकार अपनी अलग-अलग रूचियों, अनुभवों और संस्कारों से कथानक का सृजन करते हैं। चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में शहरी जीवन का यथार्थ एवं वास्तविक चित्रण किया है, जिसके कारण नए कहानीकारों में उनका स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण है। कहानी कला की दृष्टि से उनकी कहानियों का विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है -

5.2.1 शीर्षक -

नई कहानी के आरंभ होने से पूर्व हिंदी कहानियों के शीर्षक प्राय: कथावस्तु की घटना अथवा पात्रों के नाम या चरित्र के गुण या किसी स्थान विशेष के नाम पर रखे जाते थे। लेकिन नई कहानी के अधिकांश शीर्षक प्राचीन परंपरा से हटकर कहानी की मूल संवेदना, जीवन-दृष्टि और मानसिक स्थिति से सम्बद्ध रहते हैं। उनमें प्रतिकात्मकता एवं सांकेतिकता अधिक रहती है। वे

पर्याप्त उत्तेजक, आकर्षक, मनोरंजक तथा प्रेरणादायी होते हैं। चंद्रकांता ने अपनी कहानियों के शीर्षक का चुनाव भी परंपरागत पद्धति पर किया है किंतु अधिकांश शीर्षक नवीन धरातल पर आधारित हैं।

जैसे - 'एक लड़की शिल्पी', 'पापा तो बस', 'सूरज उगने तक' आदि कहानियों के शीर्षक परंपरागत हैं। इनके अतिरिक्त 'कित्ये जाणां पुत्तर ?', 'नानी तुम ?', 'देश-काल', 'इन्तजार बरकरार', 'जंगली जलेबी', 'पापा तो बस', 'चक्रव्यूह', 'अनार के फूल', 'मुक्ति-प्रसंग', 'हत्यारा', 'एक युद्ध और' और 'नूराबाई' आदि कहानियों के शीर्ष सांकेतिक एवं व्यजंनात्मक हैं।

जैसे - 'नानी तुम?' शीर्षक में अनिच्छित दांपत्य जीवन की व्यंजना है। 'हत्यारा', 'चक्रव्यूह' आदि शीर्षक सांकेतिक हैं। शीर्षकों को पढ़ते ही पाठक के मन में कई प्रश्न उठते हैं।

सभी कहानियों के शीर्षक पाठकों के मन में जिज्ञासा, उत्सुकता एवं कौतुहल जागृत करनेवाले हैं। ऐसे ही 'कित्ये जाणां पुत्तर ?' और 'वितस्ता की जहर' शीर्षक में कश्मीर में व्याप्त आतंकवाद का चित्रण है। 'मुक्तिप्रसंग', 'एक अध्याय का अंत' और 'अनार के फूल' शीर्षक भी जीवन की बदली हुई परिस्थितियों में पुराने मूल्यों के प्रतिक हैं, जिस पर पुरानी पीढ़ी आज भी अपना अधिकार जमाए बैठी है।

5.2.2 कथानक -

चंद्रकांता की कहानियों का कथानक अपना विशेष महत्त्व रखता है। चंद्रकांता अनुभवों, संस्कारों एवं जीवन दृष्टियों की कहानीकार हैं। इसलिए उनके कथानक में विविधता है। कहीं वे ग्रामीण विसंगतियों को लेकर कथानक सृजन करती हैं, तो कहीं शहरी जीवन की समस्याओं से जूझते लोगों की कथा-व्यथा का कथानक लेकर कहानी का सृजन करती हैं। उनके कथानक में घटनाओं का संघर्ष भी है और परिस्थितियों का तनाव भी।

चंद्रकांता की कहानियों में कथानक मोड़ लेता हुआ चलता है जिसमें हर मोड़ पर परिवेश के जीवंत, यथार्थ चित्र स्पष्ट हुए हैं। कथानकों में तनाव, बेबसी, अभाव, दर्द, पीड़ाएँ, संवेदनाएँ ही घटना-सी लगती हैं। कथानक में परिवेश के अनुसार पात्रों के इर्द-गिर्द का उनका जीवंत परिवेश होता है। उसमें उनकी स्थिति, घर, परिवार, समस्याएँ, नौकरी-पेशा, खेत-खलिहान, यात्रा, घटनाएँ,

रीति-रिवाज, बेबसियाँ, पीड़ाएँ, अभाव, बदलाव चेतना आदि सब कुछ शामिल हुआ है। इतना ही नहीं उस परिवेश में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याएँ भी होती हैं। गाँव-घर के, देश-परदेश के अनेक पात्र हैं।

चंद्रकांता ने शहरी जीवन पर अधिक कहानियाँ लिखी हैं। ग्रामीण जीवन पर भी कुछ मात्रा में कहानियाँ लिखी हैं। कथानक में ग्रामीण और शहरी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियों के कथानक में शहरी और ग्रामीण जीवन के विविध पहलूओं का चित्रण सहजता से और यथार्थ ढंग से हुआ है। उसका कारण यह है कि उनका जन्म ही नगर में हुआ और वे पढ़-लिखकर जीविका की खोज के लिए बड़े-बड़े शहरों में रही।

5.2.3 ***चरित्र-चित्रण*** -

चंद्रकांता आधुनिक युग की सफल कहानीकार हैं। उन्होंने शहरी और ग्रामीण जीवन पर लिखी हुई कहानियों में पात्रों का चरित्र-चित्रण यथार्थ रूप से किया है। जो उनके आस-पास के परिवेश के हैं वही उनके ग्रामीण कहानियों के पात्र हैं। शहरी या महानगरीय कहानियों के पात्र अनिवासी भारतीय और शहरी हैं। उन्होंने ग्रामीण और शहरी जीवन को नजदीक से देखा था। इसलिए उनके दु:ख, दर्द, पीड़ा और समस्याओं का चित्रण स्वानुभव से किया है। उनकी कहानियों में चित्रित पात्रों के माध्यम से ग्रामीण और शहरी मध्यवर्गीय समाज की समस्याएँ, दर्द, पीड़ा, गाँव के नेता और सेठ-साहूकारों के अन्याय, शोषण के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया है। पात्रों के आंतरिक और बाह्य गुणों तथा उनके द्वंद्व का चित्रण करने में उन्हें सफलता मिली है। इसलिए उनकी कहानियाँ लोकप्रिय बन गई हैं।

चंद्रकांता ने ग्रामीण और शहरी जीवन पर लिखी हुई कहानियों के पात्रों के माध्यम से और अपने अनुभवों के सहारे सामाजिक समस्याओं का यथार्थ एवं वास्तविक चित्रण किया है। पात्रों का अंतरिक द्वंद्व, पीड़ा तथा समस्याएँ ह्रदय को छू लेती हैं। उनके पात्र सशक्त, सजीव एवं प्रभावी बने हैं। उन्होंने शहरी जीवन के विविध पहलू तथा समस्याओं को उजागर करते समय जो पात्र मिले हैं, उनमें से कुछ पात्र और उनकी समस्याएँ, दर्द तथा पीड़ाओं का विवेचन इस प्रकार है -

'नूरबाई' कहानी की नूरा गरीब, अन्याय और अत्याचारों से ग्रस्त असहाय नारी के रूप में चित्रित है। पति शराब पीने और वेश्या के पास जाने के कारण बीमार रहता है। नूरा अकेली ही जी-तोड़ मेहनत करके घर चलाती है। नूरा की असहाय स्थिति को देखकर जद्देशाह और सेठ उस पर अत्याचार करते हैं। लेखिका ने नूरा को असहाय और अत्याचारों से पीड़ित नारी के रूप में चित्रित किया है।

'दहलीज पर न्याय' कहानी की रूक्की को अन्याय और अत्याचार सहना पड़ता है। रूक्की को शादी के पाँच साल बाद बच्चा होता है। लेकिन गाँव का महंत उसके बेटे की बलि देना चाहता है। जो पुलिस मनुष्य के रक्षण करनेवाले हैं, वही रूक्की पर अत्याचार करते हैं। लेखिका ने रूक्की को असहाय और अत्याचारोंसे पीड़ित नारी के रूप में चित्रित किया है।

'सच और सच का फासला' कहानी के द्वारा लेखिका ने लोगों की खोखली सभ्यता और प्रतिष्ठा का चित्रण किया है। कहानी की नायिका प्रेमा के पिता गरीबी के कारण अपनी बेटियों की शादी नहीं कर सकते। सभी लड़कियाँ कुँवारी ही रहती हैं। प्रेमा मोती नामक लड़के से प्यार करती है। दोनों शादी करना चाहते हैं। लेकिन मोती की माँ अपनी झूठी प्रतिष्ठा के लिए मोती की शादी किसी दूसरे लड़की के साथ तय करती है। अंत में प्रेमा एक दिन एक लड़के के साथ भाग जाकर शादी करती है।

'सूरज उगने तक' कहानी का नायक विमल पढ़ा-लिखा बेकार युवक है। उसने प्रथम श्रेणी में इंजीनियरिंग की उपाधि हासिल की है। वह बहुत होशियार और होनहार है। लेकिन उसे नौकरी नहीं मिलती। लेखिका ने विमल के माध्यम से बेकार युवक का चित्रण किया है।

'पापा तो बस' कहानी का रमाकांत पढ़ा-लिखा लड़का है। तीन साल पहले बी. ए. कर चुका है। वह एक दिन नौकरी के लिए मुलाकात (इंटरव्यु) देने के लिए शहर में जाता है। शहर में सब पैसा खर्च होता है, तब उसे घर वापस आने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती है। वह शरीफ लोगों

की बस्ती में पैसे माँगने के लिए जाता है। लेकिन वहाँ उसे चोर, डाकू, आतंकवादी समझकर लोग मार-पीट करते हैं।

'अनार के फूल' कहानी में तलाक-पीड़ित, असहाय नारी का चित्रण किया है। कहानी की स्त्री पात्र नूरी की शादी हुई थी। लेकिन उसका पति उसे तलाक देकर बूआ की लड़की के साथ शादी करता है। नूरी अपने दो बच्चे को अपने पास रखती है। चंद्रकांता ने नूरी का चित्रण तलाक-पीड़ित, असहाय नारी के रूप में किया है। समाज में पुरुष अपने स्वार्थ और स्वच्छंदी स्वभाव के कारण स्त्रियों पर अन्याय करते हैं, उसका चित्रण इस कहानी में लेखिका ने किया है।

चंद्रकांता ने ग्रामीण और शहरी परिवेश के अनुसार विभिन्न-स्वभावों के और समस्याओं से पीड़ित पात्रों का चित्रण अपने स्वानुभव के आधार पर किया है। सभी वर्ग के पात्र अपनी विशेषताओं के अनुसार उचित ढंग से चित्रित हुए हैं।

5.2.4 कथोपकथन / संवाद -

चंद्रकांता की कहानियों में कथोपकथन सीधे, सरल, प्रभावी, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल हैं। उन्होंने शहरी और ग्रामीण परिवेश के अनुसार कथोपकथन में सरलता और सहजता की ओर विशेष ध्यान दिया है। इसलिए कहीं-कहीं संवाद छोटे हैं, तो कहीं-कहीं काफी लंबे हैं। कथोपकथन के द्वारा पात्रों के आंतरिक और बाह्य गुणों को सहजता से स्पष्ट किया है।

चंद्रकांता के ग्रामीण वातावरण की कहानियों के संवाद ग्रामांचल से जुड़े हुए हैं। गाँव की जिंदगी की लोक संस्कृति, उसका माधुर्य, ओजस्वी, लोकभाषा, मुहावरेदार शैली के साथ क्षेत्रीय भंगिमा लक्षित होती है। लोकरस में परिपूर्ण संवाद पूरे लोक-जीवन को उजागर करते हैं। संवादों में ग्रामीण शब्दों का विशिष्ट योगदान है, जिसके कारण ग्रामीण जीवन की गंध उससे फूट पड़ती है। उनके संवाद केवल मनोरंजन के लिए नहीं होते, तो समाज, देश, काल और राजनीति को उजागर करते हैं। चंद्रकांता की कहानियों के संवाद अधिक बड़े भी हैं। जैसे -

'दहलीज पर न्याय' कहानी की नायिका रूक्की पुलिसथाना रपट लिखवाने जाती है। तब पुलिसथाने में बैठे अन्य गुनहगार रूक्की को देखकर कहते हैं -

''चांदी है साले पुलसियों की यहां''

''हां यार, एक तरफ थैलियाँ, साबुत की साबुत भेड़ बकरियाँ, और दूसरी तरफ ये तर माल''

तब रूक्की कहती है - ''क्यों भैया, तुम्हारे कोई माँ-बहन नहीं घर में ?''

तब गुनहगार कहते हैं- ''माँ-बहन तो हैं, पर तेरी जैसी छम्मक-छल्लो लुगाई नहीं।''[17]

चंद्रकांता की कहानियों में कहीं-कहीं संवाद छोटे हैं, तो कहीं-कहीं लंबे हैं। लेकिन लंबे संवाद कहानी के विकास में बाधा नहीं डालते।

'करीने के कायल' कहानी का नायक और नायिका के संवाद इतने लंबे हैं कि, उससे पति-पत्नी की मजबूरियों का वर्णन उसमें आता है -

''जाने क्या उल्टा-सीधा खा लिया है। कुछ तो अपनी सेहत का भी ध्यान रखा करो।''

निशा चुप !

''कुछ सर्दी-गर्मी तो नहीं हो गई ?''

निशा चुप !

''क्या बात है भई, हमसे नाराज हो क्या ?''

''नहीं ! अब निशा ने आवाज निकाली, 'सुनो, मैं कुछ कहूँ तो गुस्सा तो नहीं करोगे ?''

''बोलो ! गुस्से की क्या बात है ?''

यो भी जुतशी गुस्सा बहुत कम करता है।

''नहीं, पहले वादा करो, गुस्सा नहीं करोगे ?''

जुतशी मन-ही-मन में कहा, फिर प्रत्यक्ष में बोला,

''अच्छा वादा करता हूँ। अब बोलो, क्या बात है ?''

''मैंने''

''हाँ तुमने''

''मैंने वह गोलियाँ लेना बंद कर दिया है।''[18]

चंद्रकांता की कहानियों में संवाद की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि आत्म संवादों के द्वारा पात्र अपने-आपसे बाते करते हुए प्रतित होते हैं। स्वगत कथन के संवाद लंबे होते हैं, तो आत्म-संवाद संक्षिप्त हैं।

चंद्रकांता की कहानियों के संवाद सीधे, सरल, पात्रानकूल, प्रसंगानुकूल और पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करनेवाले होने के कारण ये कहानियाँ रोचक और सफल बन गई हैं।

5.2.5 देश काल -वातावरण -

चंद्रकांता ने शहरी और ग्रामीण जीवन पर कहानियाँ लिखी हैं। वातावरण चाहे ग्रामीण हो या शहरी हो, उसके अनुसार पात्रों के चरित्र विकसित नहीं होते। समाज के रीति-रिवाज, ढंग, रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान, रूढ़ियाँ, सरकार का कार्य और प्राकृतिक प्रकोपों के साथ-साथ परिवेश के अनुसार पशु-पंछियों का योगदान रहता है। चंद्रकांता ने इन सभी बातों की ओर विशेष ध्यान देकर कहानियों में देश काल वातावरण की निर्मिती की है।

चंद्रकांता ने शहरी और ग्रामीण परिवेश को नजदीक से देखा था, इसलिए उनकी शहरी परिवेश की कहानियाँ हो या ग्रामीण परिवेश की कहानियाँ। दोनों में उन्होंने परिवेश का सजीव एवं सशक्त चित्रण किया है। प्राकृतिक और निसर्ग आदि का हू-ब-हू एवं यथार्थ चित्रण किया है।

प्राकृतिक प्रकोप याने बारिश का चित्रण 'पहाड़ी बारिश' कहानी में किया है।

आतंकवाद और कश्मीर का चित्रण उनकी 'कित्य जाणां पुत्तर ?', 'रहमते बारान' और 'वितस्ता की जहर' कहानियों में मिलता है।

चंद्रकांता की कहानियों में गाँव, घर, परिवार, खेत-खलिहान, सड़क दुकान, जाने पहचाने लोग आदि सब परिवेश का यथार्थ चित्रण हैं। उस विशिष्ट परिवेश से इन चित्रों को अलग करके नहीं देखा जा सकता। उन्होंने कहानियों में परिवेश के रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े चित्रण और हर प्रकार के लोग और वातावरण आदि का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने ग्रामीण और शहरी जीवन को नजदीक से देखा था जिया था, इसलिए स्वानुभव और आत्मियता से परिवेश की निर्मिती करने में वे सफल हुई हैं।

शहरी और विदेशी कहानियों में देश काल वातावरण की निर्मिती चंद्रकांता ने यथार्थ रूप में की है। उन्होंने देश काल वातावरण का सजीव एवं यथार्थ चित्रण करके कहानियों को वास्तविक एवं यथार्थ बनाया है। इसलिए उनकी कहानियाँ लोकप्रिय बन गई हैं।

5.2.6 भाषा शैली -

चंद्रकांता की भाषा शैली सीधी और सरल है। उन्होंने भाषा को और सरल तथा प्रभावी बनाने के लिए शुद्ध खड़ी बोली के तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, पंजाबी, कश्मीरी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है।

पंजाबी शब्द -

कित्ये जाणां पुत्तर ?' कहानी में पंजाबी भाषा के शब्द हैं, जैसे - पुत्तर, गुड्डो, जिवै, कित्ये आदि।

उर्दू और फारसी शब्द -

अजनबी, इन्सानियत, शराफत, गलतफहमी, शैतान, बर्दाश्त, इन्साफ, इंशा-अल्लाह, मुहल्ला आदि।

ध्वन्यात्मक शब्द -

गू, गू, गू-गू-गू..... पक्षियों की आवाज़

आयं ठांय ठठक-ठठक..... तोप की आवाज़।

जूऽऽम ......जहाज की आवाज़

कूं ऽऽ छक-छक-छुक-छुक-धड़-धड़ड़-धड़ - रेल की आवाज़।

अंग्रेजी शब्द -

'गंगा नहाने के बाद', 'धराशायी', 'सूरज उगने तक', 'पहाड़ी बारिश', 'तुमने कोशिश

तो की', 'शेष होता साम्राज्य', 'बात ही कुछ और' आदि कहानियों में चंद्रकांता ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है।

स्पेसमाड़िक डिसिप्लिनेरियन, बॉर्डर, सीनियारिटी, मैट्रिक, एप्रोच, हेयरड्रू, ब्युटिशियन, ऑर्डर, लंच, टाईम, सिस्टम, फाईल, डॉक्टर, स्वेटर, इंजीनियर, रेजिडेण्ट, प्रोजेक्ट, ड्रायव्हर, ब्रीफकेस, दैट्सआल, ट्रेनिंग, पब्लिकवर्क, डिपार्टमेण्ट, टाइफाइड़, युनिवर्सिटी, प्रोफेसर, फ्रैक्ट्रिया, थ्री-व्हीलर, आऊट ऑफ डेट, कम्पुटर आदि।

मुहावरें तथा लोकोक्तियों का प्रयोग -

चंद्रकांता ने कहानियों में मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है। कहानी के पात्र गाँव के हो या शहर के, उनकी भाषा में मुहावरों का प्रयोग है।

'पुनर्जन्म' कहानी में - 'मरगिल्ले, करमफूटे, कलमुंहे, सालेजहां के आदि कामचलाऊ मुहावरें आए हैं।

उनकी कहानियों की भाषा में 'निक्के-निक्के बैंगन चोर, बड़े-बड़े सेंधचोर, जैसी लोकोक्तियाँ भी शामिल हैं।

शैली -

चंद्रकांता की भाषा शैली की अपनी एक विशेषता है। उन्होंने कहानियों में वातावरण, परिस्थिति और काल के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग किया है। वह किसी शैलीगत बंधन में नहीं बंधती, बल्कि परिवेश, परिस्थिति एवं काल के अनुसार पात्रों को, उनकी ही भाषा को लेकर चलती है। इसीलिए शैली वर्णनात्मक भी हो सकती है और घटनात्मक भी।

'मामला घर का', 'मुक्ति-प्रसंग', 'कित्ये जाणां पुत्तर', 'हत्यारा' आदि कहानियों में घटनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। लेकिन इनमें से किसी भी कहानी की शैली घटनात्मक नहीं कही जा सकती। क्योंकि इन कहानियों में बाप-बेटों, माँ की मृत्यू मात्र से कहानी निर्मित नहीं हुई तो उसके पीछे देश, काल, समाज, परंपरा आदि का परिवेश शामिल है।

नाटकीय शैली -

चंद्रकांता की अपनी निजी शैली है। वह परिवेशगत जीवन एवं काल के अनुसार अपना रूप बदलती है। उसमें वर्णनात्मकता दिखाई देती है। लेकिन पात्र लेक्चरबाजी नहीं करते। वे अपने जीवन के तमाम तनावों और अभावों को व्यक्त करते हैं। लेखिका प्रत्यक्ष रूप से पेश नहीं आती। लेकिन पात्रों को दिशा प्रदान करती है। कभी-कभी पात्र स्वयं रंगमंच पर बोलते हैं और फिर लुप्त हो जाते हैं। ऐसे पात्र नाटकीय ढंग से एक-दूसरे से टकराते हुए पेश आते हैं। 'दहलीज पर न्याय' कहानी में नाटकीय शैली का प्रयोग अच्छी तरह से हुआ है। रूक्की और पुलिस के संवाद से ऐसा लगता है कि पात्र स्वयं रंगमंच पर आकर बाते करते हैं।

"ऐ ऽऽ कौन है तू ? इधर क्यों सोयी पड़ी है ?"

"आप हवलदार साहब हो न ?"

"तेरी आँखों में चर्बी चढ़ी है जो पहचानती नहीं ?"

"नहीं हुजुर, छिमा करना, मैंने पहचाना नहीं। वो वर्दी नहीं पहनी है न ?"

"ठीक है, ठीक है, बोल क्या बात है ?"

"हुजूर फरियाद करने आयी हूँ।"

"किससे कैसी फरियाद ? कोई मर-मुट गया ? कहीं कत्ल-वत्ल हो गया।"

"नहीं, हूजुर, वो रपट लिखानी है।"[19]

भावप्रधान शैली -

चंद्रकांता की कहानियों में कहीं-कहीं भावुकता का तीव्र संवेग दृष्टिगोचर होता है। 'एक लड़की शिल्पी' भावप्रधान कहानी है। शिल्पी का प्रेमी शिल्पी को कहता है - "मेरे तुम्हारे बीच पारे की तरह बहता यह प्यार का उन्माद.... इसे कोई नाम न देना, यह तुम्हारे लिए है। सिर्फ तुम्हारे लिए ..... अश्चर्य।"[20]

गीतात्मक शैली -

'अनार के फूल' कहानी में काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। नूरी काम करते समय अपना प्यारा गीत गाती है।

''ओ अनार के फूल ! काश ! तुम पहले आते मेरे पास !
यौवन की बहारे,
तो अब मुझ से रूठ गयी। अब देर हो गयी।''[21]

'वितस्ता की जहर' कहानी में दादी अपने शेखर को अपना प्रिय गीत गाकर सुनाती है -

''डुंगली चँ डुंग दूय नाग सुय,
महरम ग ख अथ राज सुय,
डुंग दिप्य में खारतम जवहरय।''[22]

'अनार के फूल' कहानी में गीतात्मक शैली का और एक उदाहरण वैष्णव साहब कहते हैं -

''या राम कहो या रहिम कहो, दोनों की गरज अल्लाह से है
या दीन कहो या धर्म कहो, मतलब तो उसी की राह से है।''[23]

उद्‌देश्य -

चंद्रकांता आधुनिक काल की सशक्त कहानीकार हैं। उन्होंने ग्रामीण और शहरी जीवन पर कहानियाँ लिखी हैं। अनेक नए कहानीकारों ने ग्रामीण और शहरी जीवन पर कहानियाँ लिखी हैं, लेकिन चंद्रकांता ने ग्रामीण और शहरी जीवन को नजदीक से देखा था, वह वहाँ रही थी। इसलिए अपने अनुभव और आत्मियता से ग्रामीण और शहरी जीवन का चित्रण कहानियों में किया है, वह बहुत ही वास्तविक और यथार्थ है। ग्रामीण और शहरी जीवन का चित्रण करते समय चंद्रकांता ने विविध समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण भी किया है। उनका दृष्टिकोण यह है कि मध्यवर्गीय समाज की समस्याएँ दर्द, शोषण, और उन पर होनेवाले अत्याचारों को उजागर करना।

'सूरज उगने तक' कहानी में बेकार युवक की समस्या और भ्रष्ट अधिकारियों के भ्रष्टाचार का वर्णन है।

'दहलीज पर न्याय' और 'नूराबाई' कहानी में पूंजीपति गरीब लोगों का शोषण कैसे करते हैं और भ्रष्ट पुलिसवाले अन्याय पीड़ितों की रक्षा नहीं करते यह स्पष्ट किया है।

'एक और युद्ध', 'गंगा नहाने के बाद' और 'अनार के फूल' आदि कहानियों में पुरानी रूढ़ियों का चित्रण है।

'हत्यारा', 'मुक्ति-प्रसंग' और 'दहलीज पर न्याय' आदि कहानियों में अंधविश्वास का चित्रण किया है।

'नानी तुम ?', 'करीने के कायल' आदि कहानियों में वर्तमान परिस्थिति में पारिवारिक संबंध कैसे टूटते जा रहे हैं, यह स्पष्ट किया है।

'नूराबाई', 'धराशायी', 'दहलीज पर न्याय' और 'अनार के फूल' आदि कहानियों में नारी पर होनेवाले अत्याचारों का चित्रण है।

इस प्रकार चंद्रकांता ने कहानियों में ग्रामीण और शहरी मध्यवर्गीय समाज जीवन की जो समस्याएँ है, उन्हें उजागर किया है। उन्हें उनके उद्देश्य की पूर्ति करने में सफलता मिली है।

निष्कर्ष -

चंद्रकांता की कहानियों में अनेक विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। लेखिका ने अपनी कहानियों में झूठ और पाखंड की प्रवृत्ति का चित्रण, सामाजिक आदर्श, घृणित प्रवृत्तियों का चित्रण, सामाजिक यथार्थ, अंधविश्वास एवं रूढ़ि-परंपरा और सामाजिक विसंगतियाँ आदि विशेषताओं का चित्रण किया हैं। चंद्रकांता की कहानियों में कहानी कला की दृष्टि से भी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। उनके कहानियों के शीर्षक सांकेतिक एवं व्यंजनात्मक हैं। कई कहानियों में शीर्षक पुराने मूल्यों के प्रतीक हैं तो कई परंपरागत हैं। चंद्रकांता के कहानियों के कथानक में शहरी और ग्रामीण जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण सहजता से और यथार्थ ढंग से हुआ है। लेखिका ने पात्रों के आंतरिक और

बाह्य गुणों तथा उनके द्वंद्व का मार्मिक चित्रण किया है। चंद्रकांता की कहानियों में कथोपकथन, सरल, सीधे, प्रभावी, पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल हैं। कहीं-कहीं संवाद छोटे हैं, तो कहीं-कहीं काफी लंबे हैं। लेखिका ने देश काल वातावरण का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियों की भाषा शैली सीधी और सरल है। कहीं-कहीं उर्दू, फारसी, पंजाबी, कश्मीरी, अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने वातावरण, परिस्थिति और काल के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग किया है। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि कहानी कला की दृष्टि से चंद्रकांता की कहानियाँ सशक्त एवं श्रेष्ठ हैं।

चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में उद्देश्य की पूर्ति करने में सफलता पाई है। लेखिका इसी तरह का कार्य आज भी कर रही हैं। उनकी कलम में जो शक्ति है, वह उनके कहानी-साहित्य में देखने को मिलती है।

संदर्भ सूची

1. चंद्रकांता, दहलीज पर न्याय, पृ. 139
2. वही, पृ. 16
3. वही, सूरज उगने तक, पृ. 23
4. वही, पृ. 181
5. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 9
6. वही, पृ. 130
7. वही, सूरज उगने तक, पृ. 229
8. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 148
9. वही, पृ. 146
10. वही, सूरज उगने तक, पृ. 251
11. वही, पृ. 240
12. वही, पृ. 22, 23
13. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 26
14. वही, सूरज उगने तक, पृ. 241
15. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 83
16. वही, सूरज उगने तक, पृ. 113
17. वही, दहलीज पर न्याय, पृ. 16
18. वही, पृ. 50, 51
19. वही, पृ. 8
20. वही, सूरज उगने तक, पृ. 154
21. वही, पृ. 229
22. वही, पृ. 254
23. वही, पृ. 234